

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्ततितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে সপ্ততিতমং দশকম্ ॥

সুদর্শনশাপমোক্ষর্ষণং, শঙ্খচূডারধর্ষণং, বৃষভাসুরধর্ষণং চ  
ইতি ঞ্ৰযি রসাকুলং রমিতরল্লেভে রল্লেরাঃ  
কদাপি পুরমঞ্চিকাকমিতুরম্ভিকাকাননে।  
সমেত্য ভরতা সমং নিশি নিষের্য দির্যোৎসরং  
সুখং সুষুপুরগ্রসীদব্রজপমুগ্রনাগস্তদা ॥ 70.1 ॥

সমুন্মুখমখোল্মুকৈরভিহতেহপি তস্মিন্ বলা -  
দমুঞ্চতি ভরৎপদে ন্যপতি পাহি পাহীতি তৈঃ।  
তদা খলু পদা ভরান্ সমুপগম্য পস্পর্শ তং  
বভৌ স চ নিজাং তনুং সমুপসাদ্য রৈদ্যাধরীম্ ॥ 70.2 ॥

সুদর্শনধর প্রভো ননু সুদর্শনাখ্যোহস্ম্যহং  
মুনীন্ ক্লচিদপাহসং ত ইহ মাং ব্যধুরাহসম্।  
ভরৎপদসমর্পণাদমলতাং গতোহস্মীত্যসৌ  
স্তুরন্ নিজপদং যযৌ ব্রজপদং চ গোপা মুদা ॥ 70.3 ॥

কদাপি খলু সীরিণা রিহরতি ঞ্ৰযি স্ত্রীজনৈ -  
র্জহার ধনদানুগঃ স কিল শঙ্খচূডোহবলাঃ।  
অতিদ্রুতমনুদ্রুতস্তমথ মুক্তনারীজনং  
রুরোজিথ শিরোমণিং হলভূতে চ তস্যাদদাঃ ॥ 70.4 ॥

দিনেষু স সুহৃজ্জনৈস্সহ রনেষু লীলাপরং  
মনোভরমনোহরং রসিতরেণুনাদামৃতম্।

भरुणुममरीदृशाममृतपारणादायिनं  
रिचिन्त्य किमु नालपन् रिरहतापिता गोपिकाः ॥ 70.5 ॥

भोजराजभृतकञ्जथ कश्चिं  
कष्टदुष्टपथदृष्टिररिष्टः।  
निष्ठुराकृतिरपष्ठु निनाद -  
स्तिष्ठते अ्य भ्रते बृषरूपी ॥ 70.6 ॥

शारुरोहथ जगतीधृतिहारी  
मूर्तिमेष बृहतीं प्रदधानः।  
पञ्जित्माशु परिघूर्ण्य पशुनां  
छन्दसां निधिमराप भरुणुम् ॥ 70.7 ॥

तुङ्गशृङ्गमुखमाश्रुभियन्तं  
सङ्गुह्य रभसादभियं तम्।  
भद्ररूपमपि दैत्यमभद्रं  
मर्दयन्नमदयः सुरलोकम् ॥ 70.8 ॥

चित्रमद्य भगरन् बृषघातां  
सुस्थिराहजनि बृषस्थितिरुर्ग्याम्।  
रर्धते च बृषचेतसि भूयान्  
मोद इत्यभिनुतोहसि सुरैस्त्रुम् ॥ 70.9 ॥

ऊक्काणि परिधारत दूरं  
रीक्ष्यतामयमिहोक्करिभेदी।  
इथमातुहसितैः सह गोपै -  
र्गेहगङ्गमर रातपुरेश ॥ 70.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥